कीर्तिशेष : राष्ट्रकवि दिनकर

20

डॉ. कंचन सिंह*

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर हिन्दी जगत के ही नहीं वरन विश्व साहित्य के अद्वितीय रचनाकार हैं। प्रत्येक कवि या लेखक जिस परिवेश में जन्म लेता है उसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अवश्य प्रभावित करता है। दिनकर जी का जन्म बिहार प्रान्त के सिमरिया नामक गांव में 23 सितम्बर सन् 1908 ईसवी में एक सामान्य कृषक परिवार में हुआ। बालपन में ही पिता की छत्रछाया से महरूम आर्थिक विपन्नता में उनका बचपन गुजरा। शिक्षा के प्रति उनके लगाव को देख बड़े भाई ने विशेष सहयोग किया। प्रारम्भिक शिक्षा उनकी गांव में ही हुई। पटना विश्वविद्यालय से 1932 में बी0ए0 आनर्स किया, इसके पश्चात एक स्कूल में वे प्रधानाध्यापक नियुक्त हुये। सन् 1934 से 1947 तक बिहार सरकार की सेवा में सब रजिस्ट्रार के पद पर लगभग 09 वर्षों तक रहे। सन् 1947 में देश की आजादी के बाद वे बिहार विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक व विभागाध्यक्ष नियुक्त हुये। सन् 1952 में वे राज्यसभा के सदस्य चुने गये। सन् 1964 से 1965 ई0 तक वे भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति बने, इसके अगले ही वर्ष भारत सरकार ने उन्हें अपना हिन्दी सलाहकार नियुक्त किया।

दिनकर की रूचि बचपन से ही कविता में थी, उनके ही शब्दों में ''**मैं न तो सुख में जन्मा था, न सुख में पलकर बड़ा हुआ हूं किन्तु मुझे साहित्य में काम करना है, यह विश्वास मेरे भीतर छुटपन से ही पैदा हो गया था। इसलिए ग्रेजुएटहोकर जब मैं परिवार के लिये रोटी अर्जित करने लग गया तब भी साहित्य की साधना मेरी निरन्तर चलती रहीं।**'' [1]

दिनकर के साहित्य में तीन काव्य संग्रह प्रमुख है–''**रेणुका'' (1935), ''हुंकार'' (1938) और ''रसवंती'' (1939)** ये रचनायें प्रारम्भिक आत्मचिंतन के समय की कषतियां हैं। इन रचनाओं में कवि दिनकर अपने व्यक्तिपरक सौन्दर्यान्विेषी मन और सामाजिक चेतना से उत्तम विवेक के परस्पर संघर्ष का तटस्थदृष्टा नहीं अपितु बीच से एक मार्ग निकालने में प्रयासरत एक साधक के रूप में परिलक्षितहोते हैं। प्रबंध काव्य संग्रहोंमें 'कुरूक्षेत्र' (1949), रश्मिरथी' (1952) तथा 'उर्वशी' प्रमुख हैं। यही रचनायें कवि को अमर बनाती हैं। सन् 1947 में सामधेनी की रचना हुयीएवं 'संस्कृति के चार अध्याय' (1956)में । वस्तुतः दिनकर कवि रूप में अधिक प्रतिष्ठितहैंपर उन्होंने श्रेष्ठ गद्य साहित्य का भी सृजन किया। विशेष रूप से उनकी ख्याति 'रश्मिरथी', 'परशुराम की प्रतीक्षा' एवं 'उर्वशी' जैसी कालजयी रचनाओं से हुई।

वस्तुतः भारतेन्दु युग से प्रवाहित होने वाली पुनरूत्थान वादी काव्यधारा जो द्विवेदी युग से होती हुई छायावादी काव्य में आ मिली, दिनकर जी उसके शिखर के कवि थे। सच

*एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दयानंद आर्य कन्या डिग्री कॉलेज, मुरादाबाद(उ.प्र.)

तो यह है कि छायावादोत्तर युग की सबसे बड़ी घटना थी दिनकर जी का आविर्भाव। छायावादी काव्य जहां एक ओर अब तक अपनी कल्पिनिक प्रियतमाके सतरंगी परिधान में सजाये कोमल भावों के फूल समर्पित कर आसुओं के समर्पण में पीड़ा, विरह, रहस्यवाद और निराशा के गीत गा रहे थे वहीं दूसरी ओर भारत का युवा बिट्रिश हुकूमत व उसके पोषक पूंजीवाद के विरोध में न जाने कितनी उम्मीदों को कर्त्वय परायणता स्वाधीनता व सेवा का व्रत लेकर ऐसे प्रेरक व्यक्ति की खोज में था, जो उसके प्राणों में चैतन्यता भर दे और उसका प्रतिनिधित्व कर रही थी वो ओजस्वी कविताऐं जो राष्ट्रभावनाओं से ओत्–प्रोत 'हिमालय', 'नई दिल्ली', 'विपथगा', हाहाकार', 'ताडव दिगम्बरी' और 'अनलकिरीट जैसी कविताओं ने जनमानस में ओज का अद्भुत संचार कर दिया था।

अपने युग की वेदना को दिनकर जैसे जागरूक व्यक्तित्व ने सिर्फ सुना ही नहीं वरन पूरी चेतना से अपनी रचनाओं में उद्घाटित भी किया। जिस समय देश परतंत्रता के जंजीरों को तोड़ आजादी की अंगडाई ले रहा था, उस समय राष्ट्रकवि अपनी कविताओं के माध्यम से लोगों में क्रान्तिकारी ऊर्जा का नूतन संचार कर रहे थे।

श्री मैथिलीशरण गुप्त जी के पश्चात राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण कविता के विद्रोही परम्परा को लेकर आगे बढने वालों में दिनकर जी का विशिष्ट स्थान है। उनके काव्य में राष्ट्रीयता के सभी तत्व यथेष्ठ मात्रा विद्यमान है जैसा कि उपाध्याय जी कहते हैं ''दिनकर परतंत्र भारत के वास्तविक वैतालिक थे।''[2] स्वातंत्र्य संस्कृति युगीन चेतना और विश्व मानवता आदि दिनकर की राष्ट्रीय चेतना के प्रमुख तत्व हैं, जिन पर उनकी रचनाओं का विशाल मेरू स्थित है। बिहार व बंगाल के क्रान्तिकारी युवकों द्वारासृजित बिस्फोटक वातावरण को उन्होनें करीब से देखा और उससे प्रभावित भी हुए। वे कहते हैं ''राष्ट्रीयता मेरे व्यक्तित्वके भीतर से नहीं जन्मी उसने बाहर से आकर मुझे आक्रान्त किया है।''[3] इसी के प्रभावस्वरूप ''बिहार की विद्रोही राष्ट्रीय चेतना के अग्निमय वातावरण में उनके कवि व्यक्तित्व का निर्माण हुआ है।''[4] दिनकर की राष्ट्रभावना उग्र एवं क्रान्तिकारी थी, उसमें पराक्रम, ओज, बिस्फोटक प्रलय का दावानल निरन्तर सुलगता रहा। जनता जगी हुई है' कविता में 'मुक्ति की बाजी जीतने के लिये जीवन मृत्यु को दांव पर लगाने की हुंकार भरता हुआ कवि कहता हैः–

खेलमरण का खेल
मुक्ति की यह पहली बाजी है
सिर पर उठा बज्र
ऑखों पर ले हरि का अभिषाप
अग्नि स्नान के बिना धुलेगानहीं राष्ट्र पाप।[5]

उनकी प्रारम्भिक रचना तांडव का हाहाकारः–

घहरे प्रलय–प्रमोद गगन में
अंध–धूम हो व्याप्त भुवन में,
बरसे आग, बहे मलय निल

मचे त्राहि जग के आंगन में
फटे अनल पाताल, घसे जग,
उछल–उछल कूदे भूघर
नाचों हे नाचो नटवर।[5]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात क्रान्ति की बुझी लौ सन 1962 में चीनी आक्रमण के समय पुनः धधक उठी। कवि आज़ाद भारत की भूखी–बिलबिलातीजनता को देख दिल्ली में बैठे राजनयिकों के विरूद्ध अपनी लेखनी से आवाज उठायी,'एक बार फिर स्वर दो' 'तूफान' 'समर भूमि' तथा अंहिसा वादी गीतों से जनता में शौर्य पराक्रम, वीरता की अग्नि प्रज्जवलित कर अन्याय तथा अत्याचार के विरूद्ध अरूणिम प्रभात लाने के लिये 'दिवस मणि' का आलोक प्रसारित किया। उनकी रचना 'परशुराम की प्रतीक्षा' में अनेक तत्कालीन प्रश्नों के उत्तर है। उसमें कवि ने अंत में भारत की गरिमा अक्षुण रखने के लिये हमें क्या करना चाहिये, इसका संकेत भी किया है। उनका विश्वास हैः–

''बाहों से हम अंबुधि अगाधथाहेंगे
धसजायेगी यह धरा अगर चाहेगें,
तूफान हमारे इंगित पर ठहरेंगे
जहां हम कहेगें, मेघ वही घहरेंगे।[6]

प्रसुप्त पौरूष को जनाने के लिये वो कहते हैः–

सामने देश माता का भव्यचरण है,
जिह्वा पर जलता हुआ एक, बस प्रण है।
काटेंगे अरि का मुंड या स्वयं कटेंगे,
पीछे परन्तु सीमा से नहीं हटेंगे।[7]

'जनता जगी हुई है' कविता में कवि दिनकर जनता के विप्लवीशक्ति की कामना करते हैं। देश के अन्दर व बाहर कुटिल कपटी व आततायी प्रकषति के लो**ग** गांधी के शान्ति सदन में आग लगाने का प्रयत्न करते हैं। उनको सबक सिखाना ही होगा, अग्नि स्नानके बिना इस देश का पाप नहीं घुलेगा, जनता को अब जगना ही होगा–

ओ गांधी के शांति सदन में आग लगाने वाले।
कपटी, कुटिल,कृतघ्न, आसुरी महिमा केमतवाले,
वैसे तो मनमार शील से हम विनम्र जीते हैं,
आतताइयों का शोणित लेकिन हम भी पीते हैं,
मुख में वेद, पीठ पर तरकष, कर में कठिन कुठार
सावधान! लेरहा परशुधर फिर नवीन अवतार।[8]

दिनकर ने कभी किसी राजनेता का यषगाननहीं किया, आजीवन जहां कहीं अन्याय देखा तो सरकार से ही निर्भीक सवाल करते रहे। समाज में जो भी गलत दिखा उसका

बेधडक विरोध किया। राष्ट्र से उनका अनन्य प्रेम था, इसीलिए देश पर अपना तन–मन–धनन्यौछावर करने वाले सैनिकों के लिये उनके हदय में विषेश स्थान था तभी तो वे कहते हैं

''जला अस्थियॉ बारी–बारी
चिटकाई जिनमें चिनगारी
जो चढ़ गये पुण्य वेदी पर
लिये बिना गर्दन का मोल
कलम आज उनकी जय बोल।।

कवि ने कभी भी हिंसा व युद्ध का समर्थन नहीं किया, उनके जीवन में त्यांग, सहिष्णुता एवं मित्रता का स्थान सर्वोपरि था, इसीलिये वे विश्व मानव कल्याण की बात करते हैं। हिमालय द्वारा वो विश्व को संदेश देते हैं –

भारत एक स्वप्न, भू को उपर ले जाने वाला।
भारत एक विचार, स्वर्ग को भू पर लाने वाला।।
भारत है संज्ञा विराग की, उज्जवल आत्म उदय की।
भारत है आभामनुष्य की सबसे बड़ी विजय की।।[9]

युद्ध की विभीषिका से व्यथित समाज को मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक संबंधों की श्रेष्ठ व्याख्या करने वाला ग्रंथ 'कुरूक्षेत्र' आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना तत्कालीन समय में था। जब तक मानव–मानव के बीच समानता व सौहार्द नहीं होगा तब तक मनुष्य सुखी नहीं होगा–

जब तक मनुज–मनुज का यह, सुखभागनहीं सम होगा।
शमित न होगा कोलाहल, संघर्ष नहीं कम होगा।। [11]

दिनकर राष्ट्रकवि के साथ–साथ जनकवि भी थे। आर्थिक शोषण से संत्रस्त लाचार जनता की स्थिति पर बार–बारअपनी रचनाओं के माध्यम से तीव्र प्रहार करते रहे। वे मानते हैं कि असमानता ही वस्तुतः क्रान्ति की जन्मदात्री है, वो भी ऐसी असमानता–

स्वानों को मिलना दूध–भात भूखे बालक अकुलाते हैं।
मां की हड्डी से चिपक ठिठुर जाड़े की रात बिताते हैं।।
युवती के लज्जा बसन बेच जब ब्याज चुकाए जाते हैं।
मालिक जब तेल फुलेलों पर पानी सा द्रव्य बहाते हैं।।
पापी महलों का अहंकार देता मुझको तब आमंत्रण। [12]

दिनकर सत्ता के नजदीक तो थे, परन्तु आम जनमानस से कमी अलग नहीं हुये। वे स्वयं कहते है–''जिस तरह मैं जवानी भर, इकबालऔर रवीन्द्र के बीच झटके खाता रहा, उसी प्रकार मैंजीवन भरगांधी और मार्क्स के बीच झटके खाता रहा हूँ।इसीलिए उजले को लाल से गुणा करने पर जो रंग बनता है वही रंग मेरी कविता का है, मेरा विश्वास है कि अन्तोगत्वा यही रंग भारतवर्ष के व्यक्तित्व का भी होगा।''

दिनकर की कविताएंजहाँ एक ओर राष्ट्र भक्ति से परिपूर्ण हैं, वहीं दूसरी और उनमें सौदर्य एवं श्रष्गांर भी है। वस्तुतः वे सुकुमार कल्पनाओं के कवि हैं, उनके काव्य ग्रथ 'रसवंती' की कविताएं प्रेम व श्रृंगार से परिपूर्ण हैं।इस संबंध में वे स्वयं कहते हैं – ''सुयश तो मुझे हुंकार से मिला लेकिन आत्मा मेरी रसवती में बसती है।'' रसवंती में वर्णित भावनाओं एवं विचारधाराओं का पूर्ण विकास कवि के ग्रंथ 'उर्वशी' में हुआ, जो उनका श्रेष्ठ प्रबंध काव्य है। महान क्रान्तिकारी राष्ट्रकवि रसवंती में समष्टि से व्यष्टि की ओर पहुंच जाते हैं, बिना संकोच वे कहते हैं –''संस्कारों से कला के सामाजिक पक्ष का प्रेमी अवश्य बन गया था, किन्तु मन मेरा भी चाहता था कि गर्जन–तर्जन से दूर रहूं और केवल ऐसी ही कविताएं लिखूं जिनमें कोमलता व कल्पना का उभार हो। 'रसवती' की रचनाओं में प्रमुख है– गीत, अगीत, प्रीति, दाह की कोयल, रस की मुरली, पावस गीत, सावन में, प्रतिमा और शेषनाग। इन रचनाओं का कवि नितांत कोमल है, उसके हृदयको तडप अनावास ही मुखरित हो उठती है–

''किसे कहूँ? धर धीर सुनेगा
दीवाने की मौन व्यथा
मेरी कड़ियाँ कसी हुई
बाकी सबके बंधन ढीले''–'भ्रमरी' [13]

x x x x

''जब से चितवन ने फेरा
मन पर सोने का पानी
मधुवेग ध्वनित रग–रग में
सपने रंग रही जवानी।''–'अंतरवासिनी' [14]

कालिदास कविद्र रविंद्र के प्रभाव ने दिनकर की रसग्राहणी शिराओं में नया प्रवाह भरा। कवि ने अपने यौवन में जो रस गंगा 'रसवंती' में बहायी 'उर्वशी' मे उसी को अपने चिंतन में पुष्ट किया। वे कहते है ''देश और काल की सीमा के बाहर निकलने का एक मार्ग योग है किन्तु दूसरी राह नर–नारी के प्रेम के भीतर से भी निकलती है। प्रेम की एक उदात्तीकष्त स्थिति यह भी है जो समाधि से मिलती जुलती है।'' उनके अनुसार प्रेम का आरम्भ भौतिकता में और परिपाक आध्यात्म में है–

''पहले प्रेम स्पर्श होता है, तदनंतर चिंतन भी
प्रणय प्रथम मिट्टी कठोर है, तब वायव्य गगन भी।।

दिनकर की रचनाएं जहाँ एक और राष्ट्र प्रेम, सामाजिक कुरीतियों आर्थिक विषमताओं विपन्नताओं के विरोध में क्रांतिकारी भावाभिव्यक्ति से परिपूर्ण हैं तो दूसरी और सौन्दर्य कोमलता, प्रेम, श्रष्गार चिंतन जो सरस भावभूमि को उद्धाटित करती हैं। ज्ञानपीठ समारोह में भाषण देते हुए वे स्वयं कहते है– **'मैं रंदा लेकर कांठ को चिकनाने नहीं आया था। मेरे हाथ में तो कुल्हाड़ी थी। मैं जड़ता की लकडियों को फाड़ रहा था। लेकिन मुझे राष्ट्रीयता, क्रांति और गर्जन–तर्जन की कविताएं लिखते देख मेरे भीतर बैठे रविन्द्र नाथ दुःखी होते थे और**

संकेतों में कहते थे– ''तू जिस भूमि पर काम कर रहा है वह काव्य के असली स्त्रोतों के ठीक समीप नहीं है।'' तब मैं ''असमय आह्वान'' में, 'हाहाकार' में कई अन्य कविताओं में अपनी किस्मत पर रोता था कि हाय काल में इतना कसकर मुझे ही क्यों पकड़ लिया? मेरे भीतर जो कोमल स्वप्न है, वो क्या मुरझाकर मर जाएंगे? उन्हें क्या शब्द बिल्कुल नहीं मिलेंगे?''[15]

दिनकर जी की भाषा परिष्कृत खड़ी बोली है, उनकी भाषा में भावों को अभिव्यक्त करने की अद्भुत क्षमता है। कवि ने भावों की अभिव्यक्ति के अनुरूप ही अलंकारों का प्रयोग किया है, विशेषरूप से उत्प्रेक्षा, रूपक, उपमा, दष्टांत आदि का। उपमा अलंकार का एक उदाहरणः–

लदी हुई कलियों से मादक टहनी एक नरम–सी।
यौवन की वनिता–सी भोली गुमसुम खडी शरम–सी।।

दिनकर की रचनाओंमें विभिन्न छंदों का प्रयोग दिखता है किन्तु बाद में वे छनद मुक्त कविता करने लगे। ओजपूर्ण, क्रान्तिकरी कविताओं के जनक दिनकर जी की रचनाओं में वीर, श्रंगार व करूण रस को विशेष स्थान मिला है।

कवि दिनकर को अपनी रचनाओं के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उनकी रचना 'कुरूक्षेत्र' के लिए उत्तर प्रदेश सरकार व भारत सरकार ने उन्हें सम्मानित किया। सन् 1959 में उनकी रचना ''संस्कषति के चार अध्याय'' के लिए उन्हे साहित्य अकादमी से सम्मानित किया गया। साथ ही राजस्थान विद्यापीठ ने उन्हें साहित्य चूड़ामणिसम्मान से भी सम्मानित किया। सन् 1959 में ही भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने उन्हें पद्म विभूषण से विभूषित किया। भागलपुर विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि ा से सम्मानित किया। उनकी रचना उर्वशी के लिए भारत के साहित्य के क्षेत्र के सबसे बड़े सम्मान ज्ञानपीठ सम्मान से सम्मानित किया। डॉ0 विश्वम्भर नाथ उपाध्याय कहते हैं ''**हिन्दी काव्य में दिनकर जैसा बड़ा ओजस्वी कवि दूसरा नहीं है, यह दिनकर के 'डेवियेशन्स' के बावजूद कहना पड़ेगा और इस तथ्य को जो नही कहता, वह कवि दिनकर के साथ अन्याय करता है।''**[16]

इस प्रकार क्रान्तिकारी अमर कवि दिनकर ने जहां एक ओर अंगारे बरसाए क्रान्ति एवं संघर्ष की ज्वाला प्रज्जवलित की और उसके आलोक में जनता कहा पथ प्रकाशित किया वहीं दूसरी ओर उर्वशी'' जैसे एवं सौदर्य श्रंगार से परिपूर्ण काव्य की रचना कर चंदन की शीतलता का एहसास भी कराया। एक अद्भुत अनोखे व्यक्तित्व के स्वामी थे, दिनकर जी। आज भी उनकी रचनाएं उतनी ही प्रासंगिक है, जितनी तत्कालीन समय में थी। आज देश में राजनीतिक सामाजितक धार्मिक आर्थिक सभी क्षेत्रों में मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है ऐसे में महाकवि दिनकर का व्यक्तित्व व उनकी रचनाएं समाज का पथप्रदर्शन करने में पूर्णतः समर्थ हैं, वे चिरकाल तक व्यष्टि व समष्टि के लिए प्रेरणास्रोत व आलोक स्तम्भ बने रहेगें।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय कवि दिनकर व उनकी काव्य कला–डॉ0 शेखर चंद्र जैन, पृ0–47

2. राष्ट्र कवि दिनकर व उनकी साहित्य साधना– सं0 प्रताप चन्द्र जयसवाल पृ0–42
3. 'चक्रवाल' भूमिका–दिनकर पृ0–33
4. दिनकर–डॉ0 सावित्री सिन्हा, पृ0–232
5. परशुराम की प्रतीक्षा, दिनकर, पृ0–20
6. रेणुका–दिनकर, पृ0–2
7. परशुराम की प्रतीक्षा–दिनकर।
8. पूर्वव्रत, पृ0–14
9. साहित्य सागर, हिन्दी पाठ्य समिति, डॉ0 बॉ0अं0म0 विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, पृ0–81
10. हिमालय–दिनकर पृ0–20
11. कुरूक्षेत्र–दिनकर पृ0–87
12. हुंकार विपथगा, पृ0–73
13. रसवंती, भ्रमरी
14. पूर्वव्रत–अन्तरवासिनी
15. साहित्य शिल्पी दिनकर का काव्यः दहकते, अंगारों, इन्द्रधनुषों की क्रीडा– (रामधारी सिंह दिनकर जयंती विशेष) सुशील कुमार।
16. कुरूक्षेत्र–दिनकर– ''दिनकर मनीषियों की दृष्टि में'' अंतिम कवर पेज।